फार्मास्यूटिकल्स निर्यात में भारत के लिए बड़ी संभावना

वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान भारतीय दवा का निर्यात करीब 10 प्रतिशत बढ़ा, अमेरिका बड़ा खरीदार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : इलेक्ट्रानिक्स के बाद फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र का निर्यात प्रदर्शन लगातार बेहतर हो रहा है। पांच साल पहले वित्त वर्ष 2018-19 में फार्मा निर्यात 13 अरब डालर था जो वित्त वर्ष 2023-24 में 27.9 अरब डालर हो गया है। बीते वर्ष कुल वस्तु निर्यात में तीन प्रतिशत की गिरावट के बावजूद फार्मा निर्यात में 9.67 प्रतिशत का इजाफा रहा। वित्त वर्ष 2022-23 में भी फार्मा निर्यात में दहाई अंक में बढ़ोतरी हुई थी। सबसे बड़ी बात है कि अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड्स, रूस जैसे विकसित देश सबसे अधिक भारतीय दवा खरीद रहे हैं। वित्त वर्ष 2023-24 में अकेले अमेरिका ने भारत से 7.83 अरब डालर की दवा का आयात किया। भारत मुख्य रूप से जेनेरिक दवाइयों का निर्यात करता है। वित्त वर्ष 2023-24 में इलेक्ट्रानिक्स निर्यात में 23 प्रतिशत की बढ़ोतरी रही है।

1.7 लाख करोड़ डालर का है वैश्विक स्तर पर फार्मा का निर्यात बाजार

- यूरोप के मुकाबले भारत की दवा 25-30% तक सस्ती
- पीएलआइ से कच्चे माल का उत्पादन बढ़ाने में मदद मिली

दो-तीन वर्षों से मेडिकल उपकरण निर्यात बढ़ा

मेडिकल उपकरणों निर्यात में भी पिछले दो-तीन सालों से 12-15 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो रही है। हालांकि, अभी मेडिकल उपकरणों का आयात अधिक हो रहा है और पिछले साल यह आयात 60,000 करोड़ रुपये रहा है। एसोसिएशन आफ इंडियन मेडिकल डिवाइस इंडस्ट्री के संयोजक राजीव नाथ ने बताया कि मेडिकल क्षेत्र से जुड़े डिस्पोजेबल और आर्थोपेडिक उत्पाद, सिरिंज, निडल, ग्लब्स जैसे कई उत्पादों के मामले में भारत का वैश्विक बाजारों में बोलबाला है। सरकार ने मेडिकल उपकरणों का उत्पादन बढ़ाने के लिए नीति की घोषणा की है। इस पर अमल से मेडिकल उपकरण का आयात कम होने के साथ निर्यात भी बढ़ेगा।

पीएलआइ से कच्चे माल के आयात में कम वृद्धि

वर्ष 2020 में कोरोना महामारी की शुरुआत के बाद फार्मा क्षेत्र में कच्चे माल के उत्पादन को बढ़ाने के लिए सरकार ने प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआइ) योजना लांच की थी। इसी का नतीजा है कि अब फार्मा से जुड़े कच्चे माल के आयात में अति मामूली बढ़ोतरी हो रही है। 40 से अधिक कंपनियां पीएलआइ योजना के तहत फार्मा क्षेत्र के लिए कच्चे माल का उत्पादन शुरू कर चुकी है या जल्द ही करने वाली है। ये कंपनियां आफ्रीका के कई देशों में फार्मा के कच्चे माल का निर्यात भी कर रही है। दवा क्षेत्र के विशेषज्ञों का मानना है कि पीएलआइ योजना की मदद से कच्चे माल के आयात में गिरावट का दौर शुरू होने में अभी दो-तीन साल और लगेंगे।

इंडियन ड्रग मैन्यूफैक्चरिंग एसोसिएशन (इडमा) के कार्यकारी निदेशक अशोक मदान के मुताबिक, अब भारतीय दवा की गुणवत्ता बढ़ती जा रही है और कोरोना काल में भारत ने 200 से अधिक देशों को वैक्सीन व दवा मुहैया कराने का काम किया। इससे हमारे लिए निर्यात बाजार तैयार हो गया। अब हम सूडान, मिस्त्र, ब्रूनेई, लातविया, हैती, इथोपिया जैसे देशों को फार्मा निर्यात कर रहे हैं। हालांकि, वैश्विक स्तर पर फार्मा का निर्यात बाजार 1.7 लाख करोड़ डालर का है और इस लिहाज से भारत की हिस्सेदारी मामूली है। लेकिन बढ़ोतरी दर को देखते हुए वर्ष 2030 तक फार्मा निर्यात 50 अरब डालर के स्तर को छू लेगा। हिमाचल ड्रग मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन के पदाधिकारी सतीश सिंघल के मुताबिक, भारत की दवा सस्ती के साथ गुणवत्ता वाली भी है। यूरोप में बनने वाली दवा भारत की तुलना में 25-30 प्रतिशत अधिक महंगी होती है। हालांकि, अब भी चीन की तरह हमारे यहां बहुत बड़ी मात्रा में एक साथ उत्पादन की क्षमता स्थापित नहीं हुई है और चीन के फार्मा उत्पाद भारत की तुलना में सस्ते होते हैं।